....और अगर युद्ध छिड़ा तो?

इंडियन इंस्टीट्यूट आफ फाइनेंस के निदेशक प्रो. जे. डी. अग्रवाल कहते हैं कि दोनों देशों के बीच सक्रिय युद्ध तीन सप्ताह से ज्यादा नहीं खिंच पाएगा।

दोनों देश कितनी लंबी लड़ाई 'एफोर्ड' कर सकते हैं?

यह इस बात पर निर्भर करता है कि दोनो के पास सैन्य साजो-सामान का भंडार कितना है। इस भंडार के सही आंकड़े अमूमन उपलब्ध नहीं कराए जाते। लेकिन पिछले तजुर्बों के आधार पर कुछ मोटे अनुमान लगाए जा सकते हैं। 1965 की लड़ाई के समय बार-बार यह कहा जा रहा था कि भारत की रक्षा सामग्री 15 दिन से ज्यादा की लड़ाई के लिए पर्याप्त नहीं है। उस वक्त शोधकर्ताओं ने यह अनुमान लगाया था कि प्रतिदिन भारतीय सेना अपने कुल साजो-सामान का छह से सात फीसदी हिस्सा खर्च कर रही थी। मगर तब के मुकाबले आज भारत का सैन्य सामग्री भंडार कई गुना ज्यादा है। अगर दोनों देशों की ताजा झड़प में दोनों पक्षों की सक्रियता यानी 'इंटेंसिटी' 1965 के युद्ध जितनी रहती है तो आज कहा जा सकता है कि मौजूदा सैन्य भंडार एक सप्ताह में तीन से चार प्रतिशत तक खर्च होगा। इस हिसाब से भारत अपनी तरफ से लगभग 30 हफ्ते तक युद्ध जारी रखना एफोर्ड सकता है। लेकिन पाकिस्तान एक छोटा देश है। उसका सैन्य भंडार भारत के मुकाबले कम है। इसके अलावा वह दिवालिया हो चुका है। उसका विदेशी मुदा भंडार इतना कम रह गया है कि वह युद्ध के दौरान नए हथियार खरीदने की सोच भी नहीं सकता। इसलिए आज की तारीख में वह दो-तीन सप्ताह से ज्यादा युद्ध करने की हालत में नहीं है।

युद्ध के क्या असर दोनों अर्थतंत्रों पर पड़ सकते हैं?

दोनों अर्थव्यवस्थाओं मे आपात्काल की स्थिति हो सकती है। रक्षा सामग्री जुटाना दोनों सरकारों की पहली चिंता बन जाएगा। सरकार की वरीयताएं उलट जाएंगी। हथियारों के कारखानों में तीन-तीन शिफ्टों में काम होगा। दोनों देशों के बाजारों में बदहवासी छा सकती है। सीमेंट और इस्पात जैसी इन्फ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी चीजों की कालाबाजारी शुरू हो सकती है। 1965 और 1971 में अनाज की जमाखोरी देखने को मिली थी लेकिन इस बार की बम्पर फसल और सरकारी गोदामों में रखे 20 मिलियन टन से ज्यादा के खाद्यान्न भंडारों को देखते हुए आज ऐसी आंशका नहीं है। टिकाऊ उपभोक्ता सामान का बाजार एकदम मंदी की गिरफ्त में जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय निवेशकों में भगदड़ मच सकती है। शेयर बाजार मंदी के नए रिकार्डों की तरफ बढ़ सकते हैं।

क्या विश्व अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हो सकती है?

विश्व अर्थव्यवस्था पर ज्यादा नकारात्मक असर नहीं पड़ेगा क्योंकि विश्व व्यापार में दोनों देशों की अधिक भागीदारी नहीं है। हां, कुछ अच्छा असर जरूर पड़ सकता है। युद्ध दोनों देशों की पेट्रोल की आयात मांग को बढ़ा देगा। विश्व की बड़ी हथियार कंपनियों को नए आर्डर भेजे जा सकते हैं। मिसाइलों और लड़ाकू विमानों के अंतरराष्ट्रीय बाजार में नई सरगर्मी होगी। इस सब से मंदी से जूझती विश्व अर्थव्यवस्था में नई मांग पैदा हो सकती है।

क्या हम परमाणु युद्ध की लागत की भी कल्पना कर सकते हैं?

वह तो विध्वंस के आयाम पर निर्भर करेगी। मैं कोई सैन्य विशेषज्ञ नहीं हूं लेकिन इतना अनुमान लगा सकता हूं कि परमाणु पहल करने वाले देश पर पूरी दुनिया की लानत टूट पड़ेगी। न सिर्फ नाटो जैसे संगठन हस्तक्षेप कर देंगे, बल्कि तरह- तरह के आर्थिक प्रतिबंध उस पर थोप दिए जाएंगे। परमाणु हथियार इस्तेमाल करने के लिए नहीं बनाए जाते। अगर किन्हीं छिपे खजाने की बदौलत दोनों देश लड़ाई को साल भर भी खींच देते हैं तो भी परमाणु बम की नौबत शायद न आए। जबकि मैं कह चुका हूं कि आज की तारीख में पाकिस्तान तीन हफ्ते से ज्यादा लड़ने की हालत में नहीं है।